मैथिली को राज्य भाषा में सम्मिलित करने से होगा मैथिली भाषा का विकास : अशोक अविचल

अमित कुमार

कई वर्षों से चली आ रही है मिथिला राज्य की स्थापना की मांग : डॉ रामनरेश

साहित्य अकादमी नई दिल्ली एवं पीजी सेंटर पश्चिमी परिसर मैथिली विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी के दूसरे दिन शनिवार को प्रतिभागियों द्वारा राघवाचार्य एवं बाबू कृष्णनंदन सिंह के जीवनी पर आलेख पाठ किया गया। आलेख पाठ के प्रथम सत्र में डॉ कुलानंद झा की अध्यक्षता में अतुलेश्वर झा द्वारा मधु कनक काव्य कौशल, डॉ प्रशान्त कुमार मनोज द्वारा राघवाचार्यक मैथिली भाषा साहित्य में अवदान एवं डॉ कृष्ण मोहन ठाकुर चुन्नू द्वारा राघवाचार्यक रचना में काव्य सौंदर्य विषय पर आलेख पाठ किया गया। द्वितीय सत्र में एमएलटी कॉलेज प्रधानाचार्य प्रो डॉ डीएन साह की अध्यक्षता में शिव प्रसाद यादव द्वारा वन कुसुम काव्य सौंदर्य, डॉ रमण कांत चौधरी द्वारा राष्ट्रीय चेतना के वाहक राघवाचार्य, डॉ नरेंद्र नाथ झा द्वारा राघवाचार्य के काव्य में ओजपूर्ण भाषा का मूल्यांकन विषय पर आलेख पाठ किया गया। वहीं पिछले सत्र में डॉ केष्कर ठाकुर के अध्यक्षता में रामदत्त सिंह द्वारा बाबू कृष्ण नंदन सिंह के जीवन एवं समग्र रचना वैशिष्ट्य, डॉ अरुण कुमार सिंह द्वारा कल्प कारिका में मानवीय संवेदना एवं डॉ लालपरी देवी द्वारा राघवाचार्यक रचना में मानवीय संवेदना विषय पर आलेख पाठ किया गया। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी उपसचिव एन सुरेश बाबू ने धन्यवाद ज्ञापन करते कहा कि संगोष्ठी में युवा पीढ़ी ज्यादा संख्या में शामिल होंगे तभी कोई कार्यक्रम सफल माना जाएगा। उन्होंने कहा कि भाषा एवं संस्कृति एक दूसरे के पूरक हैं। साहित्य अकादेमी मैथिली परामर्श मंडल संयोजक अशोक कुमार झा अविचल ने कहा कि मैथिली में ज्ञान आधारित पोथी का काफी अभाव है। मैथिली को राज्य भाषा में सम्मिलित करने से मैथिली का विकास होगा। समापन भाषण में डॉ रामनरेश सिंह ने कहा कि मिथिला राज्य की स्थापना की मांग कई वर्षों से चली आ रही है। मिथिला एवं मैथिली के विकास के लिए मिथिला के जनमानस को आगे आना होगा। स्वतंत्रता संग्राम में साहित्यिक सिपाही राघवाचार्य एवं बाबू कृष्ण नंदन सिंह की रचना मैथिली के विकास में सहायक सिद्ध हुआ है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ डीएन साह ने कहा कि जो व्यक्ति जितना अधिक पुस्तक का अध्ययन करेंगे। वे किसी भी संगोष्ठी में उतना ही ज्ञानवर्धक वकतव्य दे सकेंगे। ज्ञान वर्धक पुस्तकों का अध्ययन आज की युवा पीढ़ी नहीं के बराबर कर रही है जो दुर्भाग्य है। डॉ कुलानंद झा ने कहा कि मैथिली साहित्य परामर्श दात्री समिति एवं मैथिली भाषा के कवि व लेखक के कृतित्व व योगदान मैथिली को आगे बढ़ाने में काफी योगदान रहा है। डॉ केष्कर ठाकुर ने कहा कि मैथिली के विकास एवं प्रचार प्रसार के लिए प्रत्येक मिथिला वासी को आगे आना होगा तभी मैथिली का विकास संभव है। कार्यक्रम के समापन पर कुंदन कुमार यादव द्वारा समदाउनी गीत ने लोगों का मन मोह लिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ अरविंद मिश्र नीरज के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में डॉ ललितेश्वर मिश्र, मैथिली विभागाध्यक्ष डॉ रणजीत सिंह, डॉ राजकुमार सिंह, डॉ अशोक कुमार सिंह. डॉ विनय कुमार चौधरी, डॉ सीपी सिंह, डॉ रमानंद झा रमण, गोपाल झा, डॉ राम चेतन्य धीरज, डॉ नरेंद्र नाथ झा, डॉ रमण कुमार चौधरी, कुमार विक्रमादित्य, डॉ सुभाष चंद्र सिंह, डॉ रेणू कुमारी, डॉ लीना सिंह, निक्की प्रियदर्शी, डॉ कविता कुमारी, प्रेम शंकर सिंह, डॉ छोटे लाल यादव, डॉ संजीव झा, रंजय कुमार, किशलय कृष्ण, प्रीति झा, जेआरएफ गौतम कुमार, केशव कुमार राय, मुकेश कुमार, संजय वशिष्ठ सहित अन्य मौजूद थे।

1858 में उंगलियों के निशान को पहचान बनाने

साहित्य अकादमी नई दिल्ली एवं मैथिली विभाग पीजी सेंटर के संयुक्त तत्वावधान में

भूतकाल का विचार वर्तमान काल में रीढ़ होता है: वीसी

कार्यक्रम

दरभंगा | एक संवाददाता

भूतकाल का विचार वर्तमान काल में रीढ़ होता है। ज्ञान वर्धन के लिए संगोष्ठी परम आवश्यक है। साहित्य अकादमी नई दिल्ली एवं मैथिली विभाग पीजी सेंटर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित राघवाचार्य एवं बाबू कृष्णानंद सिंह जन्मशतवार्षिकी दो दिवसीय संगोष्ठी का उदघाटन करते बीएनएमयू के कुलपति प्रो.डॉ.आर.के.पी.रमण ने कहा। उन्होंने कहा कि राघवाचार्य एवं बाबू कृष्णानंद जी का मैथिली साहित्य में बहुत बड़ा योगदान रहा है। मैथिली साहित्य के दोनों महान विभूतियों की जितनी भी चर्चा की जाए वह बहुत कम होगा। दोनों महापुरुषों ने मैथिली भाषा में कई पुस्तकों की रचना की है। हम सबको मैथिली व मिथिला की महत्ता को समझना परम आवश्यक है। उन्होंने कहा मैथिली एक रोजगार की भाषा है।

शुक्रवार को पीजी सेंटर में आयोजित कार्यक्रम का उदघाटन करते कुलपति सहित अन्य लोग। इसमें काफी संख्या में छात्र-छात्राओं सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

प्रति कुलपति प्रो.डॉ.आभा सिंह ने कहा हम सभी स्वाधीनता के 75 वें वर्ष को अमृत महोत्सव के रूप में मना रहे हैं। साहित्य अकादमी द्वारा इन दोनों महान विभूतियों के लिए कार्यक्रम आयोजित करना काफी सराहनीय है। ऐसे संगोष्ठी के आयोजन से मैथिली भाषा को प्रवाह मिलेगा। मैथिली परामर्श मंडल संयोजक अशोक कुमार अविचल ने कहा दोनों ही साहित्यकार मैथिली साहित्य में वीर रस के रचनाकार थे। साथ ही राष्ट्रीय चेतना के संवाहक ही थे। मातृभाषा मैथिली हमसबों की मां है। घर घर में मैथिली बोली जाए। बच्चों को मैथिली पढ़ने और बोलने के लिए प्रेरित करें। प्रथम सत्र की अध्यक्षता करते डॉ महेंद्र झा ने कहा कि वर्तमान अपने अतीत को तेजी से भुला रहा है। डॉ.कुलानंद झा के संचालन, साहित्य अकादमी के उप सचिव एन सुरेश बाबू द्वारा स्वागत भाषण, मैथिली विभागाध्यक्ष प्रो.डॉ.रंजीत कुमार सिंह के द्वारा अध्यक्षीय भाषण एवं डॉ. रामनरेश सिंह के धन्यवाद ज्ञापन में आयोजित दो सत्र के कार्यक्रम में डा.वीणा ठाकुर, डॉ ललन प्रसाद अद्री, डॉ.अमोल राय, डॉ.महेंद्र झा, डॉ. राजाराम प्रसाद, डॉ.सी.पी.सिंह, प्रधानाचार्य प्रो. डॉ.के.पी. यादव, प्रो.डॉ.अरुण कुमार खां, प्रो.डॉ.डी.एन.साह, डॉ.केष्कर ठाकुर, डा.राम चेतन्य धीरज, डॉ विनय कुमार चौधरी, प्रो विद्यानंद झा, डा.अरुण कुमार सिंह, डॉ.नरेंद्र नाथ झा, डॉ.रमन झा, डॉ सुमन कुमार, डॉ बलबीर झा, डॉ प्रशांत कु मनोज, गोपाल झा, डॉ अभय कुमार, डॉ अर्चना कुमारी, डॉ कविता कुमारी, अंशु कुमारी, डॉ लीना सिंह, डॉ अशोक कुमार सिंह, मुक्तेश्वर सिंह मुकेश, मुख्तार आलम सहित अन्य मौजूद थे।

द्वितीय सत्र में शंकर झा एवं नारायण झा द्वारा आलेख प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यापति रचित गीत जय जय भैरवी असुर भयाउनि गीत डा.बिजली प्रकाश के द्वारा प्रस्तुत किया गया। शनिवार को भी दो सत्रों में कार्यक्रम आयोजित होगा।

दो दिवसीय जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी दूसरे दिन समदाउन गीत के साथ संपन्न

मैथिली को राज्य भाषा में सम्मिलित करने से होगा मैथिली भाषा का विकास: अशोक अविचल

नवबिहार दूत संवाददाता

सहरसा। साहित्य अकादमी नई दिल्ली एवं पीजी सेंटर पश्चिमी परिसर मैथिली विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी के दूसरे दिन शनिवार को प्रतिभागियों द्वारा राघवाचार्य एवं बाबू कृष्णनंदन सिंह के जीवनी पर आलेख पाठ किया गया।

आलेख पाठ के प्रथम सत्र में डॉ कुलानंद झा की अध्यक्षता में अतुलेश्वर झा द्वारा मधु कनक काव्य कौशल, डॉ प्रशान्त कुमार मनोज द्वारा राघवाचार्यक मैथिली भाषा साहित्य में अवदान एवं डॉ कृष्ण मोहन ठाकुर चुन्नू द्वारा राघवाचार्य रचना में काव्य सौंदर्य विषय पर आलेख पाठ किया गया। द्वितीय सत्र में एमएलटी कॉलेज प्रधानाचार्य प्रो डॉ डीएन साह की अध्यक्षता में शिव प्रसाद यादव द्वारा वन कुसुम काव्य सौंदर्य, डॉ रमण कांत चौधरी द्वारा राष्ट्रीय चेतना के वाहक राघवाचार्य, डॉ नरेंद्र नाथ झा द्वारा राघवाचार्य के काव्य में ओजपूर्ण भाषा का मूल्यांकन विषय पर आलेख पाठ किया गया। वही तिसरे सत्र में डॉ कैप्टन ठाकुर के अध्यक्षता में रामदत्त सिंह द्वारा बाबू

कृष्ण नंदन सिंह के जीवन एवं समग्र रचना वैशिष्ट्य, डॉ अरुण कुमार सिंह द्वारा कल्प कारिका में मानवीय संवेदना एवं डॉ लालपरी देवी द्वारा राघवाचार्यक रचना में मानवीय संवेदना विषय पर आलेख पाठ किया गया।

इस अवसर पर साहित्य अकादेमी उपमाधिव एन सुरेश बाबू ने धन्यवाद ज्ञापन करते कहा कि संगोष्ठी में युवा पीढ़ी ज्यादा संख्या में शामिल होंगे तभी कोई कार्यक्रम सफल माना जाएगा। उन्होंने कहा कि भाषा एवं संस्कृति एक दूसरे के पूरक है। साहित्य अकादेमी मैथिली परामर्श मंडल संयोजक अशोक कुमार झा अविचल ने कहा कि मैथिली में ज्ञान आधारित पोथी का काफी अभाव है मैथिली को राज्य भाषा में सम्मिलित करने से मैथिली का विकास होगा। समापन भाषण में डॉ रामनरेश सिंह ने कहा कि मिथिला राज्य की स्थापना की मांग कई वर्षों से चली आ रही है। मिथिला एवं मैथिली के विकास के लिए मिथिला के जनमानस को आगे आना होगा। स्वतंत्रता संग्राम में साहित्यिक सिपाही राघवाचार्य एवं बाबू कृष्ण नंदन सिंह की रचना मैथिली के विकास में सहायक सिद्ध हुआ है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ डीएन साह ने कहा कि जो व्यक्ति जितना अधिक पुस्तक का अध्ययन करेंगे। वे किसी भी संगोष्ठी में उतना ही ज्ञानवर्धक वक्तव्य दे सकेंगे। ज्ञान वर्धक पुस्तकों का अध्ययन आज की युवा पीढ़ी नहीं के बराबर कर रही है जो दुर्भाग्य है। डॉ कुलानंद झा ने कहा कि मैथिली साहित्य परामर्श दाता समिति एवं मैथिली भाषा के कवि व लेखक के कृतित्व व योगदान मैथिली को आगे बढ़ाने में काफी योगदान रहा है।

डॉ कैप्टन ठाकुर ने कहा कि मैथिली के विकास एवं प्रचार प्रसार के लिए प्रत्येक मिथिला वासी को आगे आना होगा तभी मैथिली का विकास संभव है। कार्यक्रम के समापन पर कुंदन कुमार यादव द्वारा समदाउनी गीत ने लोगों का मन मोह लिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ अनिंद मिश्र नीरज के द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में डॉ ललितेश्वर मिश्र, मैथिली विभागाध्यक्ष डॉ रणजीत सिंह, डॉ राजकुमार सिंह, डॉ अशोक कुमार सिंह, डॉ विनय कुमार चौधरी, डॉ सीपी सिंह, डॉ रमानंद झा रमण, गोपाल झा, डॉ राम चैतन्य धीरज, डॉ नरेंद्र नाथ झा, डॉ रमण कुमार चौधरी, कुमार विक्रमादित्य, डॉ सुधाष चंद्र सिंह, डॉ रेणु कुमारी, डॉ लीना सिंह, निक्की प्रियदर्शी, डॉ कविता कुमारी, प्रेम शंकर सिंह, डॉ छोटे लाल यादव, डॉ संजीव झा, रंजय कुमार, किशलय कृष्ण, प्रीति झा, जेआरएफ गौतम कुमार, केशव कुमार राय, मुकेश कुमार, संजय वशिष्ट सहित अन्य मौजूद थे।

मैथिली साहित्य में राघवाचार्य और बाबू कृष्णानंदन का योगदान अविस्मरणीय

संवाद सूत्र, सहरसा: शुक्रवार को शहर के पीजी सेंटर पश्चिमी परिसर में साहित्य अकादमी एवं पीजी सेंटर के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का शुभारंभ किया गया। उद्घाटन भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डा. आरके पी रमण, प्रति कुलपति प्रो. आभा सिंह, विशिष्ट अतिथि डा. वीणा ठाकुर, साहित्य अकादमी मैथिली परामर्श मंडल संयोजक अशोक कुमार झा अविचल, उपसचिव एन सुरेश बाबू, डा. रामनरेश सिंह, विभागाध्यक्ष डा. रंजीत कुमार सिंह एवं डा. कुलानंद झा ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया। कुलपति ने अपने संबोधन में कहा कि राघवाचार्य एवं बाबू कृष्णानंद का मैथिली साहित्य में बहुत बड़ा योगदान है। मैथिली साहित्य के दोनों महान विभूति की जितनी भी चर्चा की जाय, वह बहुत ही कम होगा। उन्होंने कहा कि सबों को मैथिली और मिथिला की महत्ता को समझना परम आवश्यक है। मैथिली एक रोजगार की भाषा है। यूपीएससी परीक्षा हो या राज्य सरकार द्वारा आयोजित प्रतियोगिता परीक्षा सभी में मैथिली की महत्ता को समझा जा सकता है। प्रति कुलपति ने कहा कहा कि साहित्य अकादमी द्वारा दोनों महान विभूतियों के लिए कार्यक्रम आयोजित करना काफी सराहनीय कार्य है। उन्होंने कहा कि राघवाचार्य की रचना में ओजरस व माधुर्य रस का समावेश है। मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक अशोक कुमार अविचल ने कहा कि दोनों कवि राष्ट्रीय चेतना के संवाहक भी थे। मातृभाषा मैथिली हम सबों की मां है। साहित्य अकादमी के उप सचिव एन सुरेश बाबू ने स्वागत भाषण एवं मैथिली विभागाध्यक्ष प्रो. डा. रंजीत कुमार सिंह ने अध्यक्षीय भाषण दिया। धन्यवाद ज्ञापन डा. रामनरेश सिंह ने किया। डा. कुलानंद झा के संचालन में आयोजित संगोष्ठी में डा. ललन प्रसाद आद्री, डा. अमोल राय, डा. महेंद्र झा, डा. राजाराम प्रसाद,, डा. सीपी सिंह, प्राचार्य डा. अरूण कुमार खां, डा. केपी यादव, डा. डीएन साह, डा. केष्कर ठाकुर, डा. राम चैतन्य धीरज, डा. विनय कुमार चौधरी, प्रो. डा. विद्यानंद मिश्र, डा. अरूण कुमार सिंह, डा. नरेंद्र नाथ झा,डा. रमन झा, डा. सुमन कुमार, डा. बलबीर झा, डा. प्रशांत कुमार मनोज, मुक्तेश्वर मुकेश, गोपाल झा, डा. अभय कुमार, डा. अर्चना कुमारी, डा. कविता कुमारी, अंशु कुमारी, डा. लीना सिंह, डा. अशोक कुमार सिंह, मुख्तार आलम आदि मौजूद थे।

पीजी सेंटर में दो दिवसीय संगोष्ठी का उद्घाटन करते (दायें से चौथे) कुलपति ● जागरण

वीएनएमयू के कुलपति प्रो. डा. आरके पी रमण ने कहा, सबों को मैथिली और मिथिला की महत्ता को समझना जरूरी

कार्यक्रम • दो दिवसीय जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी को बीएनएमयू के कुलपति ने किया संबोधित

शिक्षक छात्रों को कक्षा में शामिल होने के लिए करें प्रेरित : डॉ. आरकेपी रमन

भास्कर न्यूज़ | सहरसा

गरीब और फकीर का जीवन झोपड़ी में बीतता है। झोपड़ी गरीब को कष्ट देता है लेकिन फकीर झोपड़ी में आनंदित रहते हैं। शिक्षक फकीर बन कर शिक्षण का कार्य करें, टूटे हुए घर में बच्चों को पढ़ाएं। शिक्षक छात्रों के प्रति जवाबदेह बनें। उन्हें कक्षा में शामिल होने के लिए प्रेरित करें। बीएनएमयू के कुलपति प्रो. डॉ. आरकेपी रमन शुक्रवार को पीजी सेंटर में मैथिली कवि एवं साहित्यकार राघवाचार्य तथा बाबू कृष्ण नंदन सिंह के जीवन वृतांत एवं रचनाओं पर प्रकाश डालने हेतु आयोजित दो दिवसीय जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। साहित्य अकादमी नई दिल्ली एवं पीजी सेंटर मैथिली विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि राघवाचार्य एवं बाबू कृष्णानंद का मैथिली साहित्य में बहुत बड़ा योगदान रहा है। मैथिली साहित्य के दोनों महान विभूतियों की जितनी भी चर्चा की जाए वह बहुत कम होगा। उन्होंने कहा कि भूतकाल का विचार वर्तमान का नींव होता है। वर्तमान के आधार पर भविष्य की रणनीति तय होती है। राघवाचार्य द्वारा रचनाओं [illegible] को स्वीकारते हुए कुलपति ने अपने पारिवारिक पृष्ठभूमि की चर्चा करते हुए [illegible] की चर्चा करते हुए कुलपति ने कहा कि [illegible] को कृष्णानंद सिंह मैथिली साहित्य में रचना करने के साथ-साथ अन्य साहित्यकार को संरक्षण देते थे। कुलपति ने कहा कि पीजी सेंटर सहरसा के जीर्णोद्धार के लिए 30 लाख रुपए की स्वीकृति मिल गई है। कुलपति ने बताया कि बीएसएस कॉलेज सुपौल में पीजी की पढ़ाई की स्वीकृति दी गई है। लगभग सभी स्नातकोत्तर विषयों में छात्रों के लिए सीटें बढ़ाई गई है। जिससे छात्रों को काफी लाभ मिलेगा।

पीजी सेंटर के जीर्णोद्धार के लिए 30 लाख की मिली स्वीकृति : कुलपति

दो दिवसीय संगोष्ठी का उद्घाटन करते कुलपति।

हम सबको मैथिली की महत्ता को समझना होगा

कुलपति ने आह्वान करते हुए कहा की हम सबको मैथिली व मिथिला की महत्ता को समझना होगा। मैथिली एक रोजगार की भाषा है। मैथिली की महत्ता हमेशा बरकरार रहे, इसके लिए हम सभी को प्रयत्नशील रहना होगा। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए प्रति कुलपति प्रो.डॉ.आभा सिंह ने कहा हम सभी स्वाधीनता के 75 वें वर्ष को अमृत महोत्सव के रूप में मना रहे हैं। साहित्य अकादमी द्वारा इन दोनों महान विभूतियों के लिए कार्यक्रम आयोजित करना काफी सराहनीय है। उन्होंने कहा राघवाचार्य की रचना में ओज रस व माधुर्य रस का समावेश है। मैथिली भाषा की तिरहुता लिपि को बरकरार रखने की जरूरत है। नई पीढ़ी को इसका ज्ञान निश्चित रूप से मिलनी चाहिए। मैथिली परामर्श मंडल संयोजक अशोक कुमार अविचल ने कहा राघवाचार्य एवं बाबू कृष्णानंद सिंह जी अल्प ज्ञात हैं अज्ञात नहीं। उन्होंने कहा कि 100 वर्ष पूरा करने वाले साहित्यकारों की जन्म शत वार्षिकी मनाई जाती है। दोनों ही साहित्यकार मैथिली साहित्य में वीर रस के रचनाकार थे।

अतिथियों को पाग, चादर और माला से किया गया सम्मानित

कार्यक्रम के प्रथम सत्र का अध्यक्षीय भाषण संबोधन में डॉ. महेंद्र झा ने कहा कि वर्तमान अपने अतीत को तेजी से भुला रहा है। इस आधार पर राघवाचार्य जी जैसे प्रतिभा संपन्न व्यक्ति को कुछ साल पहले साहित्यांगन और आज साहित्य अकैडमी ने स्मरण कर फिर से पुनर्जीवित करने का काम किया है। द्वितीय सत्र में शंकर झा एवं नारायण झा द्वारा आलेख प्रस्तुत किया गयासंगोष्ठी में मैथिली विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. डॉ. रंजीत कुमार सिंह के द्वारा अध्यक्षीय भाषण दिया गया। दो दिवसीय जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का उद्घाटन कुलपति, विशिष्ट अतिथि डॉ. वीणा ठाकुर, साहित्य अकादमी मैथिली परामर्श मंडल संयोजक अशोक कुमार झा अविचल, उपसचिव एन सुरेश बाबू, डॉ. रामनरेश सिंह, विभागाध्यक्ष डॉ. रणजीत कुमार सिंह एवं डॉ. कुलानंद झा के द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यापति रचित गीत जय जय भैरवी असुर भयाउनि गीत डॉ. बिजली प्रकाश के द्वारा प्रस्तुत किया गया। आगंतुक अतिथियों को पाग, चादर, माला व पुष्पगुच्छ से सम्मानित किया गया।

पीजी सेंटर में आयोजन . दो दिवसीय जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी का कुलपति ने किया उद्घाटन

मैथिली व मिथिला की महत्ता को समझना परम आवश्यक

- मैथिली भाषा की तिरहुता लिपि को बरकरार रखने की है जरूरत : प्रति कुलपति

प्रतिनिधि, सहरसा

साहित्य अकादमी नयी दिल्ली एवं पीजी सेंटर मैथिली विभाग के संयुक्त तत्वावधान में शुक्रवार को दो दिवसीय जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी का बीएनएमयू कुलपति प्रो डॉ आरकेपी रमण, प्रति कुलपति प्रो डॉ आभा सिंह, विशिष्ट अतिथि डॉ वीणा ठाकुर, साहित्य अकादमी मैथिली परामर्श मंडल संयोजक अशोक कुमार झा अविचल, उपसचिव एन सुरेश बाबू, डॉ रामनरेश सिंह, विभागाध्यक्ष डॉ रणजीत कुमार सिंह एवं डॉ कुलानंद झा के द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन किया. कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यापति रचित जय जय भैरवी असुर भयाउनि गीत डॉ बिजली प्रकाश के द्वारा प्रस्तुत किया गया. आगंतुक अतिथियों को पाग, चादर, माला व पुष्प गुच्छ से सम्मानित किया गया. स्वागत भाषण एन सुरेश बाबू के द्वारा एवं विषय वक्तव्य अशोक कुमार झा अविचल के द्वारा दिया गया. कार्यक्रम को संबोधित करते कुलपति डॉ रमण ने कहा कि राघवाचार्य एवं बाबू कृष्णानंद का मैथिली साहित्य में बहुत बड़ा योगदान रहा है. मैथिली साहित्य के दोनों महान विभूतियों की जितनी भी चर्चा की जाये, वह बहुत कम होगी. उन्होंने कहा कि भूतकाल का विचार वर्तमान का रीढ़ होता है. हमें भविष्य की रणनीति पहले ही

कार्यक्रम का उद्घाटन करते अतिथि, मौजूद शिक्षाविद .

तय करनी चाहिए. दोनों महापुरुषों ने मैथिली भाषा में कई पुस्तकों की रचना की है. बाबू कृष्णानंद सिंह अमीर घराने से आते थें, जबकि राघवाचार्य जी बहुत ही गरीब परिवार से आते थे. हम सबको मैथिली व मिथिला की महत्ता को समझना परम आवश्यक है. उन्होंने कहा मैथिली एक रोजगार की भाषा है. यूपीएससी परीक्षा हो या राज्य सरकार द्वारा आयोजित प्रतियोगिता परीक्षा सभी में मैथिली की महत्ता को समझा जा सकता है. मैथिली की महत्ता हमेशा बरकरार रहे इसके लिए हम सभी को प्रयत्नशील रहना होगा. उन्होंने कहा कि पीजी सेंटर सहरसा के पुनरुद्धार के लिए 30 लाख रुपये की स्वीकृति मिल गयी है. जिसके द्वारा जर्जर पीजी सेंटर का पुनरुद्धार किया जायेगा. उन्होंने बताया कि बीएसएस कॉलेज सुपौल में पीजी की पढ़ाई की स्वीकृति दी गयी है. लगभग सभी स्नातकोत्तर विषयों में छात्रों के लिए सीटें बढ़ायी गयी है. जिससे छात्रों को काफी लाभ मिलेगा. प्रति कुलपति प्रो डॉ आभा सिंह ने कहा कि हम सभी स्वाधीनता के 75 वें वर्ष को अमृत महोत्सव के रूप में मना रहे हैं. साहित्य अकादमी द्वारा इन दोनों महान विभूतियों के लिए कार्यक्रम आयोजित करना काफी सराहनीय है. लोगों को इस कार्यक्रम से इन दोनों महान विभूतियों के बारे में काफी जानकारी मिलेगी. उन्होंने कहा कि राघवाचार्य की रचना में ओजरस व माधुर्य रस का समावेश है. भारतीय संस्कृति दुनिया के सर्वश्रेष्ठ संस्कृति में से एक है. भाषा की जीवंतता में लिपि का काफी योगदान है. मैथिली भाषा की तिरहुता लिपि को बरकरार रखने की जरूरत है. नयी पीढ़ी को इसका ज्ञान निश्चित रूप से मिलना चाहिए. मैथिली भाषा का प्रवाह अवरुद्ध हो रहा है. ऐसे संगोष्ठी के आयोजन से मैथिली भाषा को प्रवाह मिलेगा. मैथिली परामर्श मंडल संयोजक अशोक कुमार अविचल ने कहा राघवाचार्य एवं बाबू कृष्णानंद सिंह जी अल्पज्ञात हैं अज्ञात नहीं. उन्होंने कहा 100 वर्ष पूरा करने वाले साहित्यकारों की जन्म शत वार्षिकी मनायी जाती है. दोनों ही साहित्यकार मैथिली साहित्य में वीर रस के रचनाकार थे. मातृभाषा मैथिली हम सबों की मां है. साहित्य अकादमी के उप सचिव एन सुरेश बाबू ने कहा साहित्य समाज का दर्पण होता है. जिस साहित्य में जो कवि पैदा होते हैं उस समय दर्शन करने का मौका देते हैं. कवि समाज में जो देखता है, उन बातों को अपने अंतर्मुखी से कविता के रूप में लाने का प्रयास करता है. कार्यक्रम के प्रथम सत्र के अध्यक्षीय भाषण भाषण में डॉ महेंद्र झा ने कहा कि वर्तमान अपने अतीत को तेजी से भुला रहा है. इस आधार पर राघवाचार्य जी जैसे प्रतिभा संपन्न व्यक्ति को कुछ साल पहले साहित्यांगन और आज साहित्य एकेडमी ने स्मरण कर फिर से पुनर्जीवित करने का काम किया है. द्वितीय सत्र में शंकर झा एवं नारायण झा द्वारा आलेख प्रस्तुत किया गया. संगोष्ठी में विभागाध्यक्ष मैथिली विभाग प्रो डॉ रंजीत कुमार सिंह के द्वारा अध्यक्षीय भाषण दिया गया. धन्यवाद ज्ञापन डॉ रामनरेश सिंह के द्वारा एवं कार्यक्रम का संचालन डॉ कुलानंद झा के द्वारा किया गया. कार्यक्रम में डॉ ललन प्रसाद अद्री, डॉ अमोल राय, डॉ महेंद्र झा, डॉ राजाराम प्रसाद, डॉ सीपी सिंह, प्रधानाचार्य प्रो डॉ केपी यादव, प्रो डॉ अरुण कुमार खां, प्रो डॉ डीएन साह, डॉ केष्कर ठाकुर, डॉ राम चेतन्य धीरज, डॉ विनय कुमार चौधरी, प्रो विद्यानंद मिश्र, डॉ अरुण कुमार सिंह, डॉ नरेंद्र नाथ झा, डॉ रमन झा, डॉ सुमन कुमार, डॉ बलबीर झा, डॉ प्रशांत कुमार मनोज, गोपाल झा, डॉ अभय कुमार, डॉ अर्चना कुमारी, डॉ कविता कुमारी, अंशु कुमारी, डॉ लीना सिंह, डॉ अशोक कुमार सिंह, किसलय कृष्ण, मुख्तार आलम सहित अन्य मौजूद थे.

शिक्षक छात्रों के प्रति जवाबदेह बनें, उन्हें कक्षा में शामिल होने के लिए प्रेरित करें

सहरसा शहर (एसएनबी)। साहित्य अकादमी नई दिल्ली एवं पीजी सेंटर मैथिली विभाग के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का उद्घाटन शुक्रवार को बीएनएमयू कुलपति प्रो.डॉ.आर.के.पी.रमण, प्रति कुलपति प्रो.डॉ.आभा सिंह, विशिष्ट अतिथि डा.वीणा ठाकुर, साहित्य अकादमी मैथिली परामर्श मंडल संयोजक अशोक कुमार झा अविचल, उपसचिव एन सुरेश बाबू, डॉ.रामनरेश सिंह, विभागाध्यक्ष डा.रणजीत कुमार सिंह एवं डॉ.कुलानंद झा के द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यापति रचित गीत जय जय भैरवी असुर भयाउनि गीत डा.बिजली प्रकाश के द्वारा प्रस्तुत किया गया। आगंतुक अतिथियों को पाग, चादर, माला व पुष्पगुच्छ से सम्मानित किया गया। स्वागत भाषण एन सुरेश बाबू के द्वारा एवं विषय वक्तव्य अशोक कुमार झा अविचल के द्वारा दिया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो.डॉ.आर.के.पी.रमण ने कहा राघवाचार्य एवं बाबू कृष्णानंद जी का मैथिली साहित्य में बहुत बड़ा योगदान रहा है।

संगोष्ठी का उद्घाटन करते अतिथि।

वासदेव मोही के निधन से भारतीय साहित्य को अपूरणीय क्षति

नई दिल्ली (एसएनबी)। साहित्य अकादमी की सामान्य परिषद के सदस्य एवं सुप्रसिद्ध सिंधी साहित्यकार वासदेव मोही का शुक्रवार को अहमदाबाद के एक अस्पताल में दोपहर तीन बजे निधन हो गया और शुक्रवार को ही उनका अंतिम संस्कार भी हो गया।

साहित्य अकादमी के सचिव श्रीनिवासराव ने उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित कर कहा कि वासदेव मोही के निधन से भारतीय साहित्य को अपूरणीय क्षति हुई है। साहित्य अकादेमी उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करती है। अविभाजित भारत में सिंध के मीरपुर खास में 2 मार्च 1944 में जन्मे वासदेव सिंधी भाषा के प्रख्यात कवि, कहानीकार और आलोचक थे। विभिन्न विधाओं में इनकी लगभग 25 कृतियां प्रकाशित हुईं। मोही की पहली पुस्तक 'बूँदों थियों मल्हार' एक गजल संग्रह के रूप में छपी थी। इनकी कुछ एक चर्चित कविता संग्रह हैं 'तजाद', 'रेल की पटरी मेरी', मनकू आदि। मोही की कृतियों का गुजराती, हिंदी और अंग्रेजी आदि भाषाओं में अनुवाद हुआ था। इनके दो कहानी संग्रह, चार अनुवाद की पुस्तकें और आलोचना की दो कृतियां प्रकाशित हैं। इनका कविता-संग्रह बर्फजो थहयल के लिये सन 1999 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। सरस्वती सम्मान, सिंधी साहित्य अकादमी सम्मान, साहित्यकार सम्मान, आजीवन उपलब्धि पुरस्कार और गंगाधर मेहर राष्ट्रीय पुरस्कार आदि अन्य पुरस्कारों से अलंकृत मोही दुबई में इंडियन हाई स्कूल से अंग्रेजी के शिक्षक तथा विभागाध्यक्ष के रूप में सेवानिवृत्त हुए थे।

अहमदाबाद के एक अस्पताल में दोपहर तीन बजे हुआ निधन

रोजगारपरक रस माधुर्य से भरी जीवंत भाषा है मैथिली : कुलपति

दो दिवसीय जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन

सन्मार्ग संवाददाता

सहरसा। साहित्य अकादमी नई दिल्ली एवं पीजी सेंटर मैथिली विभाग के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन बीएनएमयू कुलपति प्रो.डॉ.आर.के.पी.रमण, प्रति कुलपति प्रो.डॉ.आभा सिंह, विशिष्ट अतिथि डा.वीणा ठाकुर, साहित्य अकादमी के मैथिली परामर्श मंडल संयोजक अशोक कुमार झा, अविचल, उपसचिव एन सुरेश बाबू, डॉ.रामनरेश सिंह, विभागाध्यक्ष डा.रणजीत कुमार सिंह एवं डॉ.कुलानंद झा ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यापति रचित भगवती गीत जय जय भैरवी असुर भयाउनि गीत की प्रस्तित से की गयी। इस दौरान आगंतुक अतिथियों को पाग, चादर, माला व पुष्पगुच्छ से सम्मानित किया गया।

स्वागत भाषण एन सुरेश बाबू के द्वारा एवं विषय प्रवेश अशोक कुमार झा अविचल के द्वारा किया गया। इस मौके पर कुलपति प्रो.डॉ.आर.के.पी.रमण ने कहा कि राघवाचार्य एवं बाबू कृष्णानंद जी का मैथिली साहित्य में बहुत बड़ा योगदान रहा है। मैथिली साहित्य के दोनों महान विभूतियों की जितनी भी चर्चा की जाय, वह बहुत कम होगा। उन्होंने कहा कि भूतकाल का विचार वर्तमान की रीढ़ होती है। हमें भविष्य की रणनीति पहले ही तय करनी चाहिए। दोनों महापुरुषों ने मैथिली भाषा में कई पुस्तकों की रचना की है। बाबू कृष्णानंद सिंह अमीर घराने से आते थे जबकि राघवाचार्य जी बहुत ही गरीब परिवार से आते थे। उन्होंने कहा मैथिली एक रोजगार की भाषा है। यूपीएससी परीक्षा हो या राज्य सरकार द्वारा आयोजित प्रतियोगिता परीक्षा सभी में मैथिली की महत्ता को समझा जा सकता है। मैथिली की महत्ता हमेशा बरकरार रहे इसके लिए हम सभी को प्रयत्नशील रहना होगा। प्रति कुलपति प्रो.डॉ.आभा सिंह ने कहा कि राघवाचार्य की रचना में ओजरस व माधुर्य रस का समावेश है।मैथिली संस्कृति दुनिया के सर्वश्रेष्ठ संस्कृति में से एक है। भाषा की जीवंतता में लिपि का काफी योगदान है। वहीं मैथिली परामर्श मंडल संयोजक अशोक कुमार अविचल ने कहा कि राघवाचार्य एवं बाबू कृष्णानंद सिंह जी मैथिली साहित्य में वीर रस के रचनाकार थे। साथ ही राष्ट्रीय चेतना के संवाहक ही थे।

धन्यवाद ज्ञापन डॉ. रामनरेश सिंह ने एवं संचालन डॉ.कुलानंद झा ने किया। कार्यक्रम में डॉ.महेंद्र झा, शंकर झा, नारायण झा,डॉ ललन प्रसाद अद्री, डॉ.अमोल राय, डॉ. राजाराम प्रसाद, डॉ.सी.पी.सिंह, प्रधानाचार्य प्रो. डॉ.के.पी. यादव, प्रो.डॉ.अरुण कुमार खां, प्रो.डॉ.डी.एन.साह, डॉ.केष्कर ठाकुर, डा.राम चेतन्य धीरज, डॉ विनय कुमार चौधरी, प्रो विद्यानंद मिश्र , डॉ.अरुण कुमार सिंह, डॉ.नरेंद्र नाथ झा, डॉ.रमन झा, डॉ. सुमन कुमार, डॉ बलबीर झा, डॉ प्रशांत कुमार मनोज, गोपाल झा, डॉ. अभय कुमार, डॉ. अर्चना कुमारी, डॉ कविता कुमारी, अंशु कुमारी, डॉ. लीना सिंह, डॉ. अशोक कुमार सिंह, किसलय कृष्ण और मुख्तार आलम सहित अन्य कई मौजूद थे।

रोजगारपरक रस माधुर्य से भरा जीवंत भाषा मैथिली : कुलपति

सोनभद्र संवाददाता, सहरसा

साहित्य अकादमी नई दिल्ली एवं पीजी सेंटर मैथिली विभाग के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी का उद्घाटन बीएनएमयू कुलपति प्रो.डॉ.आर.के.पी.रमण, प्रति कुलपति प्रो.डॉ.आभा सिंह, विशिष्ट अतिथि डा.वीणा ठाकुर, साहित्य अकादमी मैथिली परामर्श मंडल संयोजक अशोक कुमार झा अविचल, उपसचिव एन सुरेश बाबू, डॉ.रामनरेश सिंह, विभागाध्यक्ष डा.रणजीत कुमार सिंह एवं डॉ.कुलानंद झा के द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यापति रचित भगवती गीत जय जय भैरवी असुर भयाउनि गीत डा.बिजली प्रकाश के द्वारा प्रस्तुत किया गया। आगंतुक अतिथियों को पाग, चादर, माला व पुष्पगुच्छ से सम्मानित किया गया। स्वागत भाषण एन सुरेश बाबू के द्वारा एवं विषय वक्तव्य अशोक कुमार झा अविचल के द्वारा दिया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो.डॉ.आर.के.पी.रमण ने कहा राघवाचार्य एवं बाबू कृष्णानंद जी का मैथिली साहित्य में बहुत बड़ा योगदान रहा है। मैथिली साहित्य के दोनों महान विभूतियों की जितनी भी चर्चा की जाए वह बहुत कम होगा। उन्होंने कहा भूतकाल का विचार वर्तमान का रीढ़ होता है। हमें भविष्य की रणनीति पहले ही तय करनी चाहिए। दोनों महापुरुषों ने मैथिली भाषा में कई पुस्तकों की रचना की है। बाबू कृष्णानंद सिंह अमीर घराने से आते थे जबकि राघवाचार्य जी बहुत ही गरीब परिवार से आते थे। बीएसएस कॉलेज सुपौल में पीजी की पढ़ाई की स्वीकृति दी गई है। लगभग सभी स्नातकोत्तर विषयों में छात्रों के लिए सीटें बढ़ाई गई है। जिससे छात्रों को काफी लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा हमें पहले संसाधन को मजबूत करना होगा। कार्यों की गुणवत्ता के लिए सभी कर्मियों का सहयोग जरूरी है। हम सबको मैथिली व मिथिला की महत्ता को समझना परम आवश्यक है। उन्होंने कहा मैथिली एक रोजगार की भाषा है। यूपीएससी परीक्षा हो या राज्य सरकार द्वारा आयोजित प्रतियोगिता परीक्षा सभी में मैथिली की महत्ता को समझा जा सकता है। मैथिली की महत्ता हमेशा बरकरार रहे इसके लिए हम सभी को प्रयत्नशील रहना होगा। प्रति कुलपति प्रो.डॉ.आभा सिंह ने कहा हम सभी स्वाधीनता के 75 वें वर्ष को अमृत महोत्सव के रूप में मना रहे हैं। साहित्य अकादमी द्वारा इन दोनों महान विभूतियों के लिए कार्यक्रम आयोजित करना काफी सराहनीय है। लोगों को इस कार्यक्रम से इन दोनों महान विभूतियों के बारे में काफी जानकारी मिलेगी। उन्होंने कहा राघवाचार्य की रचना में ओजरस व माधुर्य रस का समावेश है।मैथिली संस्कृति दुनिया के सर्वश्रेष्ठ संस्कृति में से एक है। भाषा की जीवंतता में लिपि का काफी योगदान है। मैथिली भाषा की तिरहुता लिपि को बरकरार रखने की जरूरत है। नई पीढ़ी को इसका ज्ञान निश्चित रूप से मिलनी चाहिए। मैथिली भाषा का प्रवाह अवरुद्ध हो रहा है। ऐसे संगोष्ठी के आयोजन से मैथिली भाषा को प्रवाह मिलेगा। मैथिली परामर्श मंडल संयोजक अशोक कुमार अविचल ने कहा राघवाचार्य एवं बाबू कृष्णानंद सिंह जी अल्पज्ञात हैं अज्ञात नहीं। उन्होंने कहा 100 वर्ष पूरा करने वाले साहित्यकारों की जन्म शत वार्षिकी मनाई जाती है। दोनों ही साहित्यकार मैथिली साहित्य में वीर रस के रचनाकार थे। साथ ही राष्ट्रीय चेतना के संवाहक ही थे। मातृभाषा मैथिली हमसबों की मां है। घर घर में मैथिली बोली जाए। बच्चों को मैथिली पढ़ने और बोलने के लिए प्रेरित करें। अगली पीढ़ी मैथिली की ओर प्रवृत्त हो हमें इस दिशा में मिलकर काम करना होगा। साहित्य अकादमी के उप सचिव एन सुरेश बाबू द्वारा स्वागत भाषण एवं विभागाध्यक्ष मैथिली विभाग प्रो.डॉ.रंजीत कुमार सिंह के द्वारा अध्यक्षीय भाषण दिया गया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. रामनरेश सिंह के द्वारा एवं कार्यक्रम का संचालन डॉ.कुलानंद झा के द्वारा किया गया। साहित्य अकादमी उप सचिव एन सुरेश बाबू ने कहा साहित्य समाज का दर्पण होता है। जिस साहित्य में जो कवि पैदा होते हैं उस समय दर्शन करने का मौका देते हैं। कवि समाज में जो देखता है उन बातों को अपने अंतमुर्खी से कविता के रूप में लाने का प्रयास करता है। कवि अपने सर्जनात्मकता को अपनी कलात्मकता के साथ प्रकट करने की कोशिश करता है। कार्यक्रम के प्रथम सत्र का अध्यक्षीय भाषण भाषण में डॉ महेंद्र झा ने कहा कि वर्तमान अपने अतीत को तेजी से भुला रहा है। इस आधार पर राघवाचार्य जी जैसे प्रतिभा संपन्न व्यक्ति को कुछ साल पहले साहित्यांगन और आज साहित्य अकादमी ने स्मरण कर फिर से पुनर्जीवित करने का काम किया है। द्वितीय सत्र में शंकर झा एवं नारायण झा द्वारा आलेख प्रस्तुत किया गया।कार्यक्रम में डॉ ललन प्रसाद अद्री, डॉ.अमोल राय, डॉ.महेंद्र झा, डॉ. राजाराम प्रसाद, डॉ.सी.पी.सिंह, प्रधानाचार्य प्रो. डॉ.के.पी. यादव, प्रो.डॉ.अरुण कुमार खां, प्रो.डॉ.डी.एन.साह, डॉ.केष्कर ठाकुर, डा.राम चेतन्य धीरज, डॉ विनय कुमार चौधरी, प्रो विद्यानंद मिश्र , डॉ.अरुण कुमार सिंह, डॉ.नरेंद्र नाथ झा, डॉ.रमन झा, डॉ सुमन कुमार, डॉ बलबीर झा, डॉ प्रशांत कुमार मनोज, गोपाल झा, डॉ अभय कुमार, डॉ अर्चना कुमारी, डॉ कविता कुमारी, अंशु कुमारी, डॉ लीनाा सिंह, डॉ अशोक कुमार सिंह,किसलय कृष्ण, मुख्तार आलम सहित अन्य मौजूद थे।

संगोष्ठी में युवा पीढ़ी ज्यादा शामिल होगी तभी कार्यक्रम सफल माना जाएगा

सहरसा शहर (एसएनबी)। साहित्य अकादमी नई दिल्ली एवं पीजी सेंटर पश्चिमी परिसर मैथिली विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय जन्म शत वार्षिकी संगोष्ठी के दूसरे दिन प्रतिभागियों द्वारा राघवाचार्य एवं बाबू .ष्णनंदन सिंह के जीवनी पर आलेख पाठ किया गया। आलेख पाठ के प्रथम सत्र में डॉ.कुलानंद झा की अध्यक्षता में अतुलेश्वर झा द्वारा मधु कनक काव्य कौशल, डॉ.प्रशान्त कुमार मनोज द्वारा राघवाचार्यक मैथिली भाषा साहित्य में अवदान एवं डॉ..ष्ण मोहन ठाकुर चुन्नू द्वारा राघवाचार्यक रचना में काव्य सौदर्य विषय पर आलेख पाठ किया गया। द्वितीय सत्र में एमएलटी कॉलेज प्रधानाचार्य प्रो.डॉ.डी.एन.साह की अध्यक्षता में शिव प्रसाद यादव द्वारा वन कुसुमक काव्य सौदर्य, डॉ.रमन कांत चौधरी द्वारा राष्ट्रीय चेतनाक वाहक राघवाचार्य, डॉ.नरेंद्र नाथ झा द्वारा राघवाचार्यक काव्य में ओजपूर्ण भाषाक मूल्यांकन विषय पर आलेख पाठ किया गया। वही पिछले सत्र में डॉ.केष्कर ठाकुर के अध्यक्षता में रामदत्त सिंह द्वारा बाबू .ष्ण नंदन सिंहक जीवन एवं समग्र रचनाक वैशिष्टय, डॉ.अरुण कुमार सिंह द्वारा कल्प कारिका मे मानवीय संवेदना एवं डॉ.लालपरी देवी द्वारा राघवाचार्यक रचना मे मानवीय संवेदना विषय पर आलेख पाठ किया गया। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी उपसचिव एन सुरेश बाबू ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा संगोष्ठी में युवा पीढ़ी ज्यादा संख्या में शामिल होंगे तभी कोई कार्यक्रम सफल माना जाएगा। उन्होंने कहा भाषा और संस.ति एक दूसरे के पूरक है। साहित्य अकादेमी मैथिली परामर्श मंडल संयोजक अशोक कुमार झा अविचल ने कहा मैथिली में ज्ञान आधारित पोथी का काफी अभाव है। मैथिली को राज्य भाषा में सम्मिलित करने से मैथिली का विकास होगा। समापन भाषण में डॉ.रामनरेश सिंह ने कहा मिथिला राज्य की स्थापना की मांग कई वर्षो से चली आ रही है। मिथिला और मैथिली के विकास के लिए मिथिला के जनमानस को आगे आना होगा। स्वतंत्रा संग्राम में साहित्यिक सिपाही राघवाचार्य एवं बाबू .ष्ण नंदन सिंह की रचना मैथिली के विकास में सहायक सिद्ध हुआ है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ.डी.एन.साह ने कहा जो व्यक्ति जितना अधिक पुस्तक का अध्ययन करेंगे वह किसी भी संगोष्ठी में उतना ही ज्ञानवर्धक भाषण दे सकेंगे।

प्रतिभागियों को सम्मान देते वरीय अतिथि।

कार्यक्रम • दो दिवसीय जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी का हुआ समापन

मैथिली विकास को मिथिलावासी को आगे आना होगा : डॉ. रामनरेश

भास्कर न्यूज | सहरसा

शनिवार को पीजी सेंटर मैथिली विभाग एवं साहित्य अकादमी के तत्वाधान में आयोजित दो दिवसीय जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी के समापन सत्र में मौजूद वक्ताओं ने कहा कि मैथिली में ज्ञान आधारित पोथी का काफी अभाव है। मैथिली को राज्य भाषा में सम्मिलित करने से मैथिली का विकास होगा। वहीं समापन संबोधन में डॉ. रामनरेश सिंह ने कहा कि मिथिला राज्य की स्थापना की मांग कई वर्षों से चली आ रही है। मिथिला और मैथिली के विकास के लिए मिथिला के जनमानस को आगे आना होगा।

संगोष्ठि में शामिल विद्वतजन।

साहित्य अकादमी नई दिल्ली के उपसचिव एन सुरेश बाबू ने कहा कि संगोष्ठी में युवा पीढ़ी ज्यादा संख्या में शामिल होंगे तभी कोई कार्यक्रम सफल माना जाएगा। संगोष्ठी के दूसरे दिन प्रतिभागियों द्वारा मैथिली के साहित्यकार राघवाचार्य एवं बाबू कृष्णनंदन सिंह की जीवनी पर आलेख पाठ किया गया। आलेख पाठ के प्रथम सत्र में डॉ. कुलानंद झा की अध्यक्षता में अतुलेश्वर झा द्वारा मधु कनक काव्य कौशल, डॉ. प्रशान्त कुमार मनोज द्वारा राघवाचार्य के मैथिली भाषा साहित्य में अवदान एवं डॉ. कृष्ण मोहन ठाकुर द्वारा राघवाचार्य की रचना में काव्य सौंदर्य विषय पर आलेख पाठ किया गया। साहित्य अकादमी मैथिली परामर्श मंडल संयोजक अशोक कुमार झा अविचल ने कहा कि मैथिली में ज्ञान आधारित पोथी का काफी अभाव है। मैथिली को राज्य भाषा में सम्मिलित करने से मैथिली का विकास होगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ. डीएनसाह ने कहा कि जो व्यक्ति जितना अधिक पुस्तक का अध्ययन करेंगे वो व्यक्ति किसी भी संगोष्ठी में उतना ही ज्ञानवर्धक भाषण दे सकेंगे। डॉ. कुलानंद झा ने कहा कि मैथिली साहित्य परामर्श दात्री समिति एवं मैथिली भाषा के कवि व लेखक के कृतित्व व योगदान मैथिली को आगे बढ़ाने में काफी योगदान रहा है। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अरविंद मिश्र नीरज के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में डॉ. ललितेश्वर मिश्र, मैथिली विभागाध्यक्ष डॉ.रणजीत सिंह, डॉ. राजकुमार सिंह, डॉ. अशोक कुमार सिंह डॉ. विनय आदि रहे।

मैथिली में ज्ञान आधारित पोथी का है अभाव
राज्य भाषा में सम्मिलित करने से होगा विकास

सत्र को संबोधित करते डॉ रमनरेश सिंह.

- दो दिवसीय जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी दूसरे दिन समदाओन के साथ संपन्न
- प्रतिभागियों ने राघवाचार्य व बाबू कृष्णनंदन सिंह की जीवनी पर किया आलेख पाठ

प्रतिनिधि, सहरसा

साहित्य अकादमी नई दिल्ली व पीजी सेंटर पश्चिमी परिसर मैथिली विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी के दूसरे दिन शनिवार को प्रतिभागियों द्वारा राघवाचार्य व बाबू कृष्णनंदन सिंह के जीवनी पर आलेख पाठ किया गया. आलेख पाठ के प्रथम सत्र में डॉ कुलानंद झा की अध्यक्षता में डॉ अनुलेखा झा द्वारा मधु कनक काव्य कौशल, डॉ प्रशांत कुमार मनोज द्वारा राघवाचार्यक मैथिली भाषा साहित्य में अवदान व डॉ कृष्ण मोहन ठाकुर चुन्न द्वारा राघवाचार्यक रचना में काव्य सौंदर्य विषय पर आलेख पाठ किया गया. द्वितीय सत्र में एमएलटी कॉलेज प्रधानाचार्य प्रो डॉ डीएन साह की अध्यक्षता में शिव प्रसाद यादव द्वारा वन कुसुम काव्य सौंदर्य, डॉ रमण कांत चौधरी द्वारा राष्ट्रीय चेतना के वाहक राघवाचार्य, डॉ नरेंद्रनाथ झा द्वारा राघवाचार्य के काव्य में ओजपूर्ण भाषा का मूल्यांकन विषय पर आलेख पाठ किया गया. वहीं पिछले सत्र में डॉ केष्कर ठाकुर की अध्यक्षता में रामदत्त सिंह द्वारा बाबू कृष्ण नंदन सिंह के जीवन व समग्र रचना वैशिष्टय, डॉ अरुण कुमार सिंह द्वारा कल्प कारिका में मानवीय संवेदना व डॉ लालपरी देवी द्वारा राघवाचार्यक रचना में मानवीय संवेदना विषय पर आलेख पाठ किया गया.

कार्यक्रम के समापन पर कुंदन कुमार यादव द्वारा समदाउनी गीत ने लोगों का. मन मोह लिया. कार्यक्रम का संचालन डॉ अरविंद मिश्र नीरज के द्वारा किया गया. कार्यक्रम में डॉ ललितेश्वर मिश्र, मैथिली विभागाध्यक्ष डॉ रणजीत सिंह, डॉ राजकुमार सिंह, डॉ अशोक कुमार सिंह. डॉ विनय कुमार चौधरी, डॉ सीपी सिंह, डॉ रमानंद झा रमण, गोपाल झा, डॉ राम चेतन्य धीरज, डॉ नरेंद्र नाथ झा, डॉ रमण कुमार चौधरी, कुमार विक्रमादित्य, डॉ सुभाष चंद्र सिंह, डॉ रेणु कुमारी, डॉ लीना सिंह, निक्की प्रियदर्शी, डॉ कविता कुमारी, प्रेम शंकर सिंह, डॉ छोटे लाल यादव, डॉ संजीव झा, रंजय कुमार, किशलय कृष्ण, प्रीति झा, जेआरएफ गौतम कुमार, केशव कुमार राय, मुकेश कुमार, संजय वशिष्ठ सहित अन्य मौजूद थे.

पुस्तकों के अध्ययन से ही बढ़ेगा ज्ञान: डॉ डीएन

इस अवसर पर साहित्य अकादमी उपसचिव एन सुरेश बाबू ने धन्यवाद ज्ञापन करते कहा कि संगोष्ठी में युवा पीढ़ी ज्यादा संख्या में शामिल होंगे, तभी कोई कार्यक्रम सफल माना जायेगा. उन्होंने कहा कि भाषा व संस्कृति एक दूसरे के पूरक हैं. साहित्य अकादमी मैथिली परामर्श मंडल संयोजक अशोक कुमार झा अविचल ने कहा कि मैथिली में ज्ञान आधारित पोथी का काफी अभाव है. मैथिली को राज्य भाषा में सम्मिलित करने से मैथिली का विकास होगा. समापन भाषण में डॉ रमनरेश सिंह ने कहा कि मिथिला राज्य की स्थापना की मांग कई वर्षों से चली आ रही है. मिथिला व मैथिली के विकास के लिए मिथिला के जनमानस को आगे आना होगा. स्वतंत्रता संग्राम में साहित्यिक सिपाही राघवाचार्य व बाबू कृष्ण नंदन सिंह की रचना मैथिली के विकास में सहायक सिद्ध हुआ है. कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ डीएन साह ने कहा कि जो व्यक्ति जितना अधिक पुस्तक का अध्ययन करेंगे. वे किसी भी संगोष्ठी में उतना ही ज्ञानवर्धक वकतव्य दे सकेंगे. ज्ञानवर्धक पुस्तकों का अध्ययन आज की युवा पीढ़ी नहीं के बराबर कर रही है जो दुर्भाग्य है. डॉ कुलानंद झा ने कहा कि मैथिली साहित्य परामर्श दात्री समिति व मैथिली भाषा के कवि व लेखक के कृतित्व व योगदान मैथिली को आगे बढ़ाने में काफी योगदान रहा है, डॉ केष्कर ठाकुर ने कहा कि मैथिली के विकास व प्रचार प्रसार के लिए प्रत्येक मिथिला वासी को आगे आना होगा तभी मैथिली का विकास संभव है.

आज मधेपुरा कॉलेज में मैथिली साहित्य में राष्ट्रीय चेतना विषय पर राष्ट्रीय सेमिनार

प्रतिनिधि, मधेपुरा

रविवार को मधेपुरा कॉलेज मधेपुरा में संगोष्ठी के माध्यम से मैथिली भाषा ज्ञान पर राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय विद्वानों द्वारा भारत के विकास व भारत के वर्तमान समस्या पर विशेष चर्चा होगी. इस बावत शनिवार को मधेपुरा कॉलेज मधेपुरा में प्राचार्य डा अशोक कुमार की अध्यक्षता में बैठक हुई.

मौके पर प्राचार्य सह कार्यक्रम संयोजक डा अशोक कुमार ने कहा कि साहित्य अकादमी नई दिल्ली व मधेपुरा कॉलेज मधेपुरा के संयुक्त तत्वावधान में मैथिली साहित्य में राष्ट्रीय चेतना विषयक एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया जायेगा. उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय सेमिनार का उद्घाटन भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो राम किशोर प्रसाद रमण व मुख्य अतिथि प्रति कुलपति प्रो आभा सिंह के द्वारा किया जायेगा. प्राचार्य सह कार्यक्रम संयोजक डा अशोक कुमार ने कहा की समिति द्वारा तैयारी लगभग पूरी कर ली गयी है. आवास की उत्तम प्रबंध कर ली गयी है. यातायात के लिए सुगम व्यवस्था भी की गयी है. उन्होंने कहा कि सेमिनार में कहीं किसी को कोई कठिनाई न हो, इसकी पूरी तैयारी की गयी है. यह संगोष्ठी विश्व में अपनी सर्वश्रेष्ठ संस्कृति में चार चांद लगाने के लिए आयोजित है. सेमिनार के सफल बनाने के लिए मधेपुरा कॉलेज मधेपुरा के शिक्षक-शिक्षकेत्तर कर्मी, छात्र-छात्राएं व आयोजन समिति के सदस्य डा भगवान कुमार मिश्रा, प्रो दिनेश प्रसाद, डा ब्रजेश कुमार मंडल, डा सच्चिदानंद यादव, डा वीएन सिंह, प्रो चंदेश्वरी प्रसाद यादव, डा आरती झा, अभय कुमार, मुकेश कुमार, प्रो गजेंद्र प्रसाद यादव, प्रो मनोज भटनागर, प्रेम कुमार, तरुण कुमार, अमल किशोर कुमार, रंजीत कुमार, सोना झा प्रयास कर रहे हैं.

बैठक में उपस्थित प्राचार्य व अन्य .

जनमानस को मैथिली के विकास को आना होगा आगे

शनिवार को आयोजित संगोष्ठी में मौजूद शिक्षाविद् व अन्य।

सहरसा | एक संवाददाता

संगोष्ठी

- पीजी सेंटर में आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी सम्पन्न
- दूसरे दिन भी दो सत्रों में चली संगोष्ठी में विद्वानों ने लिये भाग

शहर के पीजी सेंटर में आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी सम्पन्न हो गया है। साहित्य अकादमी नई दिल्ली एवं मैथिली विभाग पीजी सेंटर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी शनिवार को भी दो सत्रों मे में हुई। जन्म शत वार्षिकी संगोष्ठी के दूसरे दिन राघवाचार्य एवं बाबू कृष्णनंदन सिंह के जीवनी पर आलेख पाठ किया गया। डॉ.रामनरेश सिंह ने समापन सत्र में कहा कि मिथिला राज्य की स्थापना की मांग कई वर्षों से चली आ रही है। मिथिला और मैथिली के विकास के लिए मिथिला के जनमानस को आगे आना होगा। स्वतंत्रा संग्राम में साहित्यिक सिपाही राघवाचार्य एवं बाबू कृष्ण नंदन सिंह की रचना मैथिली के विकास में सहायक सिद्ध हुआ है।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता करते डॉ.कुलानंद झा ने कहा मैथिली साहित्य परामर्श दात्री समिति एवं मैथिली भाषा के कवि व लेखक के कृतित्व व योगदान मैथिली को आगे बढ़ाने में काफी योगदान रहा है। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ.डी.एन.साह ने कहा कि जो व्यक्ति जितना अधिक पुस्तक का अध्ययन करेंगे वह किसी भी संगोष्ठी में उतना ही ज्ञानवर्धक भाषण दे सकेंगे। ज्ञान वर्धक पुस्तकों का अध्ययन आज की युवा पीढ़ी नहीं के बराबर कर रही है, जो दुर्भाग्य है। उपसचिव एन सुरेश बाबू ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा संगोष्ठी में युवा पीढ़ी ज्यादा संख्या में शामिल होंगे तभी कोई कार्यक्रम सफल माना जाएगा। साहित्य अकादेमी मैथिली परामर्श मंडल संयोजक अशोक कुमार झा अविचल ने कहा मैथिली में ज्ञान आधारित पोथी का काफी अभाव है। मैथिली को राज्य भाषा में सम्मिलित करने से मैथिली का विकास होगा। प्रथम सत्र में अतुलेश्वर झा, डॉ.प्रशान्त कु मनोज, एवं डॉ.कृष्ण मोहन ठाकुर चुन्नू द्वारा राघवाचार्यक रचना में काव्य सौंदर्य विषय पर तथा दूसरे सत्र में शिव प्रसाद यादव, डॉ.रमन कांत चौधरी, डॉ.नरेंद्र नाथ झा, रामदत्त सिंह, डॉ.अरुण कुमार सिंह व डॉ.लालपरी देवी द्वारा भी विभिन्न विषयों पर आलेख पाठ किया गया।डॉ अरविंद मिश्र नीरज के संचालन में आयोजित कार्यक्रम में डॉ.केष्कर ठाकुर, डॉ.ललितेश्वर मिश्र, डॉ.रणजीत सिंह, डॉ.राजकुमार सिंह, डॉ.अशोक कुमार सिंह. डॉ.विनय कुमार चौधरी, डॉ.सी.पी.सिंह, डॉ.रमानंद झा रमण, गोपाल झा, डॉ.राम चेतन्य धीरज, डॉ.नरेंद्र नाथ झा, डॉ.रमण कुमार चौधरी, कुमार विक्रमादित्य सहित अन्य शामिल थे।

राघवाचार्य एवं बाबू कृष्णानंद जी का मैथिली साहित्य में बहुत बड़ा योगदान: कुलपति

नवबिहार दूत संवाददाता

सहरसा। साहित्य अकादमी नई दिल्ली एवं पीजी सेंटर मैथिली विभाग के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय जन्म शतवार्षिकी संगोष्ठी का उद्घाटन बीएनएमयू कुलपति प्रो.डॉ.आर.के.पी.रमण, प्रति कुलपति प्रो.डॉ.आभा सिंह, विशिष्ट अतिथि डा.वीणा ठाकुर, साहित्य अकादमी मैथिली परामर्श मंडल संयोजक अशोक कुमार झा अविचल, उपसचिव एन सुरेश बाबू, डॉ.रामनरेश सिंह, विभागाध्यक्ष डा.रणजीत कुमार सिंह एवं डॉ.कुलानंद झा के द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यापति रचित भगवती गीत जय जय भैरवी असुर भयाउनि गीत डा.बिजली प्रकाश के द्वारा प्रस्तुत किया गया। आगंतुक अतिथियों को पाग, चादर, माला व पुष्पगुच्छ से सम्मानित किया गया। स्वागत भाषण एन सुरेश बाबू के द्वारा एवं विषय वक्तव्य अशोक कुमार झा अविचल के द्वारा दिया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो.डॉ.आर.के.पी.रमण ने कहा राघवाचार्य एवं बाबू कृष्णानंद जी का मैथिली साहित्य में बहुत बड़ा योगदान रहा है। मैथिली साहित्य के दोनों महान विभूतियों की जितनी भी चर्चा की जाए वह बहुत कम होगा। उन्होंने कहा भूतकाल का विचार वर्तमान का रीढ़ होता है। हमें भविष्य की रणनीति पहले ही तय करनी चाहिए। दोनों महापुरुषों ने मैथिली भाषा में कई पुस्तकों की रचना की है। बाबू कृष्णानंद सिंह अमोर घराने से आते थे जबकि राघवाचार्य जी बहुत ही गरीब परिवार से आते थे। बीएसएस कॉलेज सुपौल में पीजी की पढ़ाई

की स्वीकृति दी गई है। लगभग सभी स्नातकोत्तर विषयों में छात्रों के लिए सीटें बढ़ाई गई है। जिससे छात्रों को काफी लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा हमें पहले संसाधन को मजबूत करना होगा। कार्यों की गुणवत्ता के लिए सभी कर्मियों का सहयोग जरूरी है। हम सबको मैथिली व मिथिला की महत्ता को समझना परम आवश्यक है। उन्होंने कहा मैथिली एक रोजगार की भाषा है। यूपीएससी परीक्षा हो या राज्य सरकार द्वारा आयोजित प्रतियोगिता परीक्षा सभी में मैथिली की महत्ता को समझा जा सकता है। मैथिली की महत्ता हमेशा बरकरार रहे इसके लिए हम सभी को प्रयत्नशील रहना होगा। प्रति कुलपति प्रो.डॉ.आभा सिंह ने कहा हम सभी स्वाधीनता के 75 वें वर्ष को अमृत महोत्सव के रूप में मना रहे हैं। साहित्य अकादमी द्वारा इन दोनों महान विभूतियों के लिए कार्यक्रम आयोजित करना काफी सराहनीय है। लोगों को इस कार्यक्रम से इन दोनों महान विभूतियों के बारे में काफी जानकारी मिलेगी। उन्होंने कहा राघवाचार्य की रचना में ओजरस व माधुर्य रस का समावेश है।मैथिली संस्कृति दुनिया के सर्वश्रेष्ठ संस्कृति में से एक है। भाषा की जीवंतता में लिपि का काफी योगदान है। मैथिली भाषा की तिरहुता लिपि को बरकरार रखने की जरूरत है। नई पीढ़ी को इसका ज्ञान निश्चित रूप से मिलनी चाहिए। मैथिली भाषा का प्रवाह अवरुद्ध हो रहा है। ऐसे संगोष्ठी के आयोजन से मैथिली भाषा को प्रवाह मिलेगा। मैथिली परामर्श मंडल संयोजक अशोक कुमार अविचल ने कहा राघवाचार्य एवं बाबू कृष्णानंद सिंह जी अल्पज्ञात है अज्ञात नहीं। उन्होंने कहा 100 वर्ष पूरा करने वाले साहित्यकारों की जन्म शत वार्षिकी मनाई जाती है। दोनों ही साहित्यकार मैथिली साहित्य में वीर रस के रचनाकार थे। साथ ही राष्ट्रीय चेतना के संवाहक ही थे। मातृभाषा मैथिली हमसबों की मां है। घर घर में मैथिली बोली जाए। बच्चों को मैथिली पढ़ने और बोलने के लिए प्रेरित करें। अगली पीढ़ी मैथिली की ओर प्रवृत्त हो हमें इस दिशा में मिलकर काम करना होगा। साहित्य अकादमी के उप सचिव एन सुरेश बाबू द्वारा स्वागत भाषण एवं विभागाध्यक्ष मैथिली विभाग प्रो.डॉ.रंजीत कुमार सिंह के द्वारा अध्यक्षीय भाषण दिया गया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. रामनरेश सिंह के द्वारा एवं कार्यक्रम का संचालन डॉ.कुलानंद झा के द्वारा किया गया। साहित्य अकादमी उप सचिव एन सुरेश बाबू ने कहा साहित्य समाज का दर्पण होता है। जिस साहित्य में जो कवि पैदा होते हैं उस समय दर्शन करने का मौका देते हैं। कवि समाज में जो देखता है उन बातों को अपने अंतर्मुखी से कविता के रूप में लाने का प्रयास करता है। कवि अपने सर्जनात्मकता को अपनी कलात्मकता के साथ प्रकट करने की कोशिश करता है। कार्यक्रम के प्रथम सत्र का अध्यक्षीय भाषण भाषण में डॉ महेंद्र झा ने कहा कि वर्तमान अपने अतीत को तेजी से भुला रहा है। इस आधार पर राघवाचार्य जी जैसे प्रतिभा संपन्न व्यक्ति को कुछ साल पहले साहित्यांगन और आज साहित्य अकादमी ने स्मरण कर फिर से पुनर्जीवित करने का काम किया है। द्वितीय सत्र में शंकर झा एवं नारायण झा द्वारा आलेख प्रस्तुत किया गया।कार्यक्रम में डॉ ललन प्रसाद अद्री, डॉ.अमोल राय, डॉ.महेंद्र झा, डॉ. राजाराम प्रसाद, डॉ.सी.पी.सिंह, प्रधानाचार्य प्रो. डॉ.के.पी. यादव, प्रो.डॉ.अरुण कुमार खां, प्रो.डॉ.डी.एन.साह, डॉ.केष्कर ठाकुर, डा.राम चैतन्य धीरज, डॉ विनय कुमार चौधरी, प्रो विद्यानंद मिश्र , डॉ.अरुण कुमार सिंह, डॉ.नरेंद्र नाथ झा, डॉ.रमन झा, डॉ सुमन कुमार, डॉ बलबीर झा, डॉ प्रशांत कुमार मनोज, गोपाल झा, डॉ अभय कुमार, डॉ अर्चना कुमारी, डॉ कविता कुमारी, अंशु कुमारी, डॉ लीना सिंह, डॉ अशोक कुमार सिंह,किसलय कृष्ण, मुख्तार आलम सहित अन्य मौजूद थे।